THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

शरीर पर प्रभुता
Dominion over the body

Author – David C. Kennedy

The Christian Science Journal Volume 133, Issue 09, September, 2015

कई लोग शारीरिक सेहत को बनाए रखने के लिए समय और ध्यान देते हैं। लेकिन इन प्रयासों के बावजूद, अक्सर लोग फिर भी स्वयं को सेहत संबंधित समस्याओं से घिरा हुआ पाते हैं, कई बार एकदम उन्हीं समस्याओं से जिनसे बचने के लिए वे भरसक प्रयत्न कर रहे थे। और कई उस उपचार को पाना चाहते हैं जो निरंतर छलावा देता रहता है।

शरीर में सेहत को बनाए रखने के योग्य होना एक प्राकृतिक इच्छा है जो हम सभी में है। मेरी बेकर एडी की भी यही इच्छा थी जब उन्होंने कई वर्षो से चली आ रही खराब सेहत से मुक्ति पानी चाही। उन्होंने महसूस किया समस्त शारीरिक कष्ट के लिए कोई तो इलाज होगा, और वह इस इलाज को ढूँढना चाहती थी, न केवल स्वयं के लिए अपितु समस्त मानव जाति के लिए भी। उन्होंने उत्तर पाने के लिए कई ढँगों से तलाश की, परन्तु उनकी तलाश उन्हें वापिस बाइबल की ओर ले जाती रही, खास तौर पर क्राइस्ट जीसस की शिक्षाओं और उपचारों तक।

जीसस निश्चित रूप से जानते थे कि शरीर को कैसे संचालित किया जाता है। बाइबल बताती है कि उन्होंने "लोगों के मध्य सभी प्रकार की बीमारी और सभी प्रकार के रोग का उपचार किया (मत्ती 4:23)।"

श्रीमति एडी ने खोज निकाला कि उनके उपचार कोई विशेष चमत्कार नहीं थे, अपितु समय रहित, अपरिवर्तनीय सत्य का परिणाम थे। जीसस ने जिन का उपचार किया उन्हें आध्यात्मिक रूप से देखा जैसे कि वे असल में थे और हैं–**परमेश्वर** के आध्यात्मिक रूप और प्रतिरूप। उन्होंने देखा कि वास्तव में वे सम्पूर्ण, अच्छे, और समन्वित थे, और उनकी **परमेश्वर**–देय सम्पूर्णता के इस बोध ने उन गलत धारणाओं का नाश किया जिन के दबाव में वे जूझ रहे थे।

जीसस ने कहा, "मेरे पास आओ, तुम सब जो कड़ा परिश्रम करते हो और बोझ से लदे हुए हो, और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)। क्राइस्ट की उपचारक शक्ति का यह आश्वासन आज हम सब तक पहुँच रहा है, क्योंकि क्राइस्ट, **परमेश्वर** की सदा रहने वाली रक्षक उपस्थिति और शक्ति है, यहाँ हमारे साथ अभी इसी वक्त। हमारी ग्रहणशील सोच तक पहुँचते हुए सत्य का क्राइस्ट संदेश, हमें वह दर्शाता है जो जीसस ने स्वयं प्रत्येक पुरुष और स्त्री में देखी : सच्ची पहचान जो कि सम्पूर्ण और समन्वित है।

क्रिश्चियन साइँस की पाठ्य पुस्तक में श्रीमति एडी लिखती हैं : "दिव्य साइँस में, मानव **परमेश्वर** का सच्चा रूप है। दिव्य प्रवृति क्राइस्ट जीसस में सर्वोत्तम अभिव्यक्त हुई थी, जिन्होंने **परमेश्वर** के सच्चे प्रतिबिम्ब को नश्वरों पर व्यक्त किया था और उनकी जिंदगियों को उस से ऊपर उठा दिया था जितनी उनकी घटिया सोच के मॉडल अनुमति देते,–विचार जिन्होंने मानव को पतित, बीमार, पाप करते हुए, और मरते हुए प्रस्तुत किया

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2017 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

था। वैज्ञानिक अस्तित्व और दिव्य उपचार की क्राइस्ट तुल्य समझ एक सम्पूर्ण सिद्धाँत* और विचार को सम्मिलित करती है,–सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मानव,–सोच और प्रत्यक्षीकरण के आधार की तरह" (सायँस एण्ड हैल्थ विद की टू द स्क्रिपचर्स, पृष्ठ 259)

कई लोगों ने इसे अनुभव किया है जिस के बारे में श्रीमति एडी ने वर्णन किया है–आध्यात्मिक समझ द्वारा उपचार। एक लम्बे समय तक मैं शरीर पर नियन्त्रण की कमी से लगातार पीड़ित था। अंततः मैंने महसूस किया मुझे इस का सामना करने की ज़रूरत थी। मुझे आध्यात्मिक बोध की जरूरत थी, और यह स्वीकार करने के लिए दृढ़ रहने की कि केवल परमेश्वर, दिव्य मन, मुझे संचालित करता है। मैंने "सम्पूर्ण सिद्धाँत और विचार–सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मानव" के दृष्टिकोण से प्रार्थना की। मैंने यह समझने के लिए प्रार्थना की कि भौतिक पदार्थ असल में ज्ञान नहीं था, और इसलिए भौतिक अंग या क्रियाएँ या प्रक्रियाएँ मुझे संचालित नहीं करते थे। मैंने यह जानने के लिए प्रार्थना की कि जो मुझे संचालित कर रहा था, वह अनंत दिव्य मन था, क्योंकि मैं मन का रूप था और इसलिए मैं मन के समन्वय को प्रकट कर रहा था। जैसे ही मैंने और अधिक स्पष्ट रूप से जाना कि वास्तव में मन मेरा संचालन कर रहा था, शरीर में समन्वय वापिस आ गया।

सायँस एण्ड हैल्थ कहती है:"हमें मानना होगा कि भौतिक पदार्थ में अत्याधिक नहीं, अपितु न्यूनतम समझ है, यदि हम बुद्धिमान और सेहतमंद रहना चाहते हैं। दिव्य मन जो कली और पुष्प को रूप देता है, इन्सानी शरीर की देख–रेख करेगा, ठीक वैसे ही जैसे यह लिली को वस्त्र पहनाता है; परन्तु कोई नश्वर त्रुटिपूर्ण, इन्सानी धारणाओं के कानूनों को थोप कर परमेश्वर के संचालन में दखल न दे" (पृष्ठ 62)।

परमेश्वर की समझ के द्वारा और अधिक प्रभुता प्राप्त करने की चेष्टा में, हम समझ जाते हैं कि हम स्वयं शरीर को नियत्रिंत नहीं करते; परमेश्वर करता है। परन्तु जिसे हम जाने या अनजाने में शक्ति देते हैं वही इसे प्रमाणित करने की हमारी योग्यता को निर्धारित करता है। हमें संचालित करने के लिए भौतिक पदार्थ के पास कोई समझ नहीं है। भौतिक पदार्थ को शक्ति देना वास्तव में नश्वर मन को शक्ति देना है, परमेश्वर से अलग नश्वरों के रूप में हमारी स्वयं की गलत भौतिक समझ को। डर तथा असंगत विचार और लक्षण जो उस झूठी समझ के साथ आते हैं स्वयं को शारीरिक बीमारी, रोग, और सीमितता के रूप में दर्शाते हैं। हम सोचते हैं यह शरीर ही है जो अपनी स्वयं की परिस्थितियों को पैदा कर रहा है, परन्तु वास्तव में यह भौतिक विचार हैं जो बाहर प्रकट होते हैं।

दूसरी तरफ, अपने स्वयं के विचार, या अभिव्यक्ति पर परमेश्वर, अच्छाई, के समन्वित नियन्त्रण को अनुभव करना, क्राइस्ट के उपचारक संदेश अपने अस्तित्व के सत्य को ग्रहण करना है। यह वास्तविक पहचान जो हमें परमेश्वर से मिली है पूरी तरह शुद्ध और पूर्ण है, अन्तश्चेतना के निरंतर समन्वित कार्य और आत्मा के सदा–सर्वदा निरोग तत्व को अभिव्यक्त करते हुए। वास्तव में हम क्या हैं, इसके बारे मे हमारा बढ़ता हुआ बोध हमारी चेतना का नवीनीकरण करता है, और इस तरह शरीर को सत्य का नया उपचारक प्रकाश देता है। यह रोग का उपचार भी करता है और साथ ही इसकी रोकथाम भी करता है। अपने विचारों में प्रकाशित सत्य के साथ, सत्य के समन्वय को निस्सन्देह हमारे शरीर पर प्रकट होना होगा।

परमेश्वर के लिए बढ़ता हुआ प्रेम, शरीर को सम्मिलित करते हुए, हमारे अनुभव के प्रत्येक पहलू पर परमेश्वर के प्रेममयी नियन्त्रण को लाने के लिए बहुत कुछ करता है। उस दिव्य सिद्धांत को सम्मान देना जिसने हमें रचा है और हमारे समन्वय को बनाए रखता है, परमेश्वर के सर्वोच्च विश्वसनीय

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गए हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

Translation © 2017 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

संचालन और देखभाल को सदैव हमारे लिए और अधिक वास्तविक बना देता है। हम बाइबल और श्रीमति एडी के लेखों से उसे सीखते हैं जो कुछ भी परमेश्वर के बारे में सच है – उसकी प्रेममयी प्रवृति के बारे में, उसके द्वारा हम सब के समन्वित संचालन के बारे में, और किस तरह परमेश्वर की आज्ञा मान कर अपनी जिंदगियों को उसके प्रेममयी नियंत्रण में लाया जाए। और हम में से कौन एक ऐसा हृदय नहीं चाहता जो पूरी तरह परमेश्वर के प्रेम में लीन हो।

खुशखबरी यह है कि हमें एक पाखंडी शरीर का समपर्ण करने के लिए किसी भी तरह के हेर–फेर की जरूरत नहीं। हमें रोजाना मात्र उस समन्वय के बोध के लिए प्रार्थना करने की जरूरत है जिसे हम सदा सर्वदा परमेश्वर का बच्चा होने के नाते अभिव्यक्त करते हैं, उसके अस्तित्व की अभिव्यक्ति होने की तरह। यह सत्य समझ आ जाने और जिए जाने पर, सेहत और आजादी को अधिक से अधिक प्रकाश में लाएगा जो परमेश्वर ने हम सभी के लिए निर्धारित की है।

Translation © 2017 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.